उपसंहार

प्रस्तुत शोध का विषय 'भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में गांधीवादी दर्शन' है। आधुनिक हिन्दी काव्य-जगत में कवि भवानीप्रसाद मिश्र की पहचान गांधीवादी कवि के रूप में है। सरल एवं सहज व्यक्तित्व के स्वामी भवानीप्रसाद मिश्र अपनी प्रखर जीवन अनुभूतियों और उनकी बेलाग अभिव्यक्ति के कारण प्रबुद्ध वर्ग और सामान्य जनमानस के बीच लोकप्रिय हैं। उनके जीवन और रचनाओं में गांधीवादी चिंतन रूपायित हुआ है। पर भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में गांधीवादी दर्शन की अभिव्यक्ति के स्वरूप का गंभीर और व्यापक रूप से मूल्यांकन उपेक्षित ही रहा है। प्रस्तुत शोध भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में गांधीवादी दर्शन की अभिव्यक्ति के आलोचनात्मक मूल्यांकन की दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का प्रथम अध्याय 'आधुनिक हिन्दी कविता में गांधीवादी दर्शन और भवानीप्रसाद मिश्र का कृतित्व' शीर्षक से है। गांधीवाद महात्मा गांधी की विचार पद्धति का व्यापक नाम है। यह कोई नया दर्शन नहीं बल्कि जीवन-पद्धति है, जो दुनिया की तमाम उत्तम विचारधाराओं का संकलन है। इसमें आध्यात्मिकता की प्रधानता है। महात्मा गांधी ने आध्यात्मिक दृष्टि को विस्तार देते हुए सत्य, अहिंसा, शांति, सहिष्णुता आदि नैतिक मूल्यों को विविध राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए ग्रहण किया है। गांधीवादी दर्शन अत्यन्त व्यापक है। धर्म-दर्शन, सामाजिक-राजनीतिक दर्शन, आर्थिक दर्शन, शिक्षा-दर्शन एवं मानव-मूल्य और विश्व-दृष्टि गांधीवादी दर्शन के मूल पक्ष हैं।

महात्मा गांधी की विचार पद्धति में धर्म की अहम् भूमिका रही है। उनके राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी तरह के कार्यों के मूल में धर्म ही है। विश्व के सभी महान धर्मों के बुनियादी सिद्धान्तों में उनकी आस्था है। गांधीवादी धर्म-दर्शन महात्मा गांधी के एकादश व्रत, वर्णाश्रम धर्म और सर्वधर्म समभाव सम्बन्धी विचारों में अभिव्यक्त हुआ है। महात्मा गांधी ने सच्चे, श्रेष्ठ और आदर्श मानव के गुणों को अपने 'एकादश व्रत' में ग्रहण किया। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अभय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारण और सर्वधर्म समभाव – को अपने एकादश व्रत में स्थान देकर महात्मा गांधी ने लोगों से इनके अनुसार आचरण करने का आग्रह किया। ये व्रत शरीर और मन को पूर्णतया नियंत्रित करते हैं। इनके अनुरूप आचरण करके मनुष्य अपने जीवन में

सफलता प्राप्त कर सकता है। महात्मा गांधी को वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था मान्य थी किंतु उसका रूढ़ अथवा विकृत रूप नहीं। वे धर्म के विशुद्ध रूप में ही वर्णाश्रम धर्म के पक्षपाती थे। महात्मा गांधी की वर्ण सम्बन्धी धारणा वैज्ञानिक और नैतिक है, रूढ़ नहीं। वे समाज की सुव्यवस्था के लिए वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करते हैं, परंतु भेदभाव की अनैतिकता को नहीं। सर्वधर्म समभाव के प्रतिपादक महात्मा गांधी के हृदय में संसार के सभी धर्मों के प्रति समान निष्ठा की भावना थी। उनका मानना था कि बाहरी विविधता होते हुए भी सभी धर्मों की आत्मा एक है, सभी धर्मों के मूल बुनियादी सिद्धान्त एक है। इसलिए किसी भी धर्म को छोटा या बड़ा मानना अनुचित है। हमारे हृदय में सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना होनी चाहिए।

महात्मा गांधी का सामाजिक दर्शन मनुष्य की मूलभूत एकता और राजनीतिक दर्शन उनके धार्मिक और नैतिक विश्वासों पर आधारित हैं, जिसकी मूल प्रेरणा 'वसुधैव कुटुम्बकम' के आदर्श में निहित है। अनेक हिन्दू परम्पराओं को ग्रहण करते हुए भी समाज सुधारक के रूप में महात्मा गांधी ने उनमें प्रचलित रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध किया। रूढ़ियों के प्रति उनके विरोध का स्वर सुधारवादी, विज्ञानसम्मत और युगानुकूल था। अमानवीय प्रथा अस्पृश्यता दलितों के आर्थिक, नैतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक उत्थान के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए अस्पृश्यता निवारण हेतु उन्होंने हरिजनोद्धार को प्राथमिकता दी। महात्मा गांधी के राजनीति में पदार्पण के समय स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था। उन्होंने हिंसात्मक ढंग से देश को स्वतंत्र कराने की बजाय सत्य और अहिंसा के शुद्ध साधनों पर बल दिया। राजनीति में अहिंसा के विकल्प के रूप में सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा महात्मा गांधी की अभूतपूर्व देन है। रामराज्य उनके स्वराज्य का आदर्श है जिसमें धर्म, न्याय, प्रेम और अहिंसा का बोलबाला है। रामराज्य में लोगों की संप्रभुता का आधार विशुद्ध नैतिक सत्ता है। राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ इसमें आर्थिक स्वतंत्रता पर भी बल दिया गया है। सर्वोदय एक आदर्श समाज व्यवस्था है, जिसका मूल आधार प्रेम है। इस व्यवस्था में समाज के सभी सदस्य एक समान है। इसमें वर्गों अथवा समुदायों के लिए कोई स्थान नहीं है। महात्मा गांधी लोकतंत्र की सफलता विकेन्द्रीकरण में मानते थे। उनके राजनीतिक विकेन्द्रीकरण का अभिप्राय यह है कि ग्राम पंचायतों को अपने ग्रामों के प्रबन्ध और प्रशासन के समस्त अधिकार सौंप दिये जाएँ।

महात्मा गांधी राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता को भी आवश्यक मानते थे। नैतिक आधार पर प्रतिष्ठित उनकी आर्थिक योजनाएँ अपने परिवेश के समूचित विचार से निर्मित हुई हैं। धर्मशास्त्रों के अपरिग्रह के विचार पर आधारित महात्मा गांधी का हृदय परिवर्तन का सिद्धान्त आर्थिक क्षेत्र में समानता लाने का एक अहिंसात्मक उपाय है। इस सिद्धान्त का अभिप्राय यह है कि पूँजीपति अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं से

अधिक सम्पत्ति को समाज की धरोहर माने। यंत्रों का अत्याधिक प्रयोग एक ओर लोगों को निकम्मा बनाता है तो दूसरी ओर बेरोजगारी की समस्या खड़ी करता है। इसलिए अपने आर्थिक विचारों में महात्मा गांधी ने यंत्रों के प्रयोग का विरोध किया है। पर लोकोपयोगी सेवाओं के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले भारी यंत्र जिनकी पूर्ति मानव अपने श्रम से नहीं कर सकता, उन यंत्रों के प्रयोग को महात्मा गांधी अनिवार्य मानते हैं। लेकिन इन पर राज्य का स्वामित्व होना चाहिए। महात्मा गांधी श्रम को यज्ञ के समकक्ष मानते थे। श्रम के सिद्धान्त का उल्लंघन ही आर्थिक विषमता का मूल कारण है। अगर व्यक्ति अपने जीवन में श्रम को अपनाये तो आर्थिक विषमता स्वयं खत्म हो जायेगी। वे चाहते थे कि पूँजी और श्रम एक दूसरे के पूरक हों और एक दूसरे की सहायता करें। इस प्रकार महात्मा गांधी की श्रम नीति उदार एवं न्याय संगत है। महात्मा गांधी कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार मानते थे। इसलिए कृषकों के अधिकारों के पक्षपाती थे। उनके अनुसार कृषि के विकास के बगैर भारत के विकास की बात करना व्यर्थ है। छोटे कृषकों को अपनी जमीन और मेहनत का पूर्ण लाभ मिले इसके लिए उन्होंने सहकारी खेती की दिशा में विचार किया। इससे श्रम की बचत होगी और उत्पादन क्षमता बढ़ेगी। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने ग्रामोद्योग के पुनरुद्धार का प्रयत्न किया। ग्रामोद्योग द्वारा गाँवों की जीवन सम्बन्धी सभी आवश्यकताएँ पूरी होंगी और वे आत्मनिर्भर होंगे। ग्रामोद्योग की स्थापना करके वे एक नवीन विकेन्द्रित ग्रामीण व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे जिससे गाँवों को शोषण से मुक्ति मिले और प्रत्येक गाँव एक स्वावलम्बी इकाई बन जाए।

महात्मा गांधी की रचनात्मक प्रतिभा अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में भी मुखरित हुई। प्रचलित शिक्षा प्रणाली मन और शरीर की उपेक्षा कर केवल मस्तिष्क का विकास करती है। सिर्फ जानकारी का खजाना देने वाली इस शिक्षा को वे अधूरी मानते थे। उनके अनुसार शरीर, मन और बुद्धि का समन्वित विकास करने वाली शिक्षा ही सच्ची है। प्रचलित शिक्षा पद्धति के दोषों को दूर करने के लिए उन्होंने नई तालीम और बुनियादी शिक्षा का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। बचपन से ही श्रम का गौरव सिखाने वाली नई तालीम भारत की परिस्थितियों के अनुकूल है। शरीर, बुद्धि और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने वाली यह शिक्षा हस्तशिल्प के माध्यम से दी जाती है। यह शिल्प, कला, स्वास्थ्य, और शिक्षा का सुन्दर समन्वय है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूर्णतया आत्मनिर्भर है। प्रचलित शिक्षा पद्धति के दोषों को दूर करने के लिए महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा प्रणाली को देश के समक्ष प्रस्तुत किया। यह शिक्षा प्रणाली सत्य, अहिंसा, नैतिकता के सिद्धांतों पर आधारित है। इसमें समस्त शिक्षा किसी-न-किसी उद्योग या हस्तकला को बुनियाद बना कर दी जाती है। इस शिक्षा-योजना में हाथों को अक्षर लिखना सिखाने से पहले औजार चलाना सिखाया जाता है। लोगों को सही मायने में आत्मनिर्भर

बनाने वाली यह शिक्षा पद्धति आर्थिक दृष्टि से भी उपयुक्त है। स्त्री-पुरुष के लिए समान अधिकारों के समर्थक महात्मा गांधी स्त्रियों के लिए भी शिक्षा को उतनी ही आवश्यक मानते हैं जितनी कि पुरुषों के लिए। उन्होंने स्त्रियों के लिए विशेष शिक्षा व्यवस्था पर जोर दिया है। जिससे वह गृह संचालन, बच्चों की देखभाल और उनकी शिक्षा वगैरा के विषय में विशेष ज्ञान अर्जित कर सकती है।

मानव-मूल्य समाज के विश्वास, आदर्श, सिद्धांत, नैतिक-नियम और व्यवहार के वे मानदण्ड हैं जो मनुष्य के व्यवहार को निर्देशित एवं नियंत्रित करते हैं। महात्मा गांधी के सम्पूर्ण जीवन दर्शन में मानवीय मूल्यों की प्रधानता है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, अस्तेय, अनुशासन, नैतिकता, अपरिग्रह, आर्थिक समानता, सहिष्णुता आदि से सम्बन्धित उनके समस्त विचारों में मानवीय मूल्यों के प्रति उनका आग्रह स्पष्ट झलकता है। महात्मा गांधी संसार के सभी लोगों को आदर्श मानव के रूप में देखना चाहते थे। पर यह तभी संभव था जब मनुष्य हिंसा और द्वेष के भावों को त्यगकर अपने अन्दर मानवीय मूल्यों का विकास करे। सत्य, अहिंसा, प्रेम, परोपकार, सेवा, विनम्रता, करुणा, सह अस्तित्व आदि मानवीय मूल्य महात्मा गांधी के स्वभाव के अंग थे। इन मानवीय मूल्यों के प्रभावस्वरूप ही उनकी दृष्टि विश्वदृष्टि में परिणत हो गई और वह लोकमंगल तथा विश्वबन्धुत्व की भावना तक पहुँच गई। महात्मा गांधी सम्पूर्ण विश्व में भ्रातृभाव देखना चाहते थे। अपनी इसी विश्व-दृष्टि के चलते वे पूरे विश्व को आपस में जोड़ने के लिए पूरे संसार को आपसी प्रेम और भाईचारे का संदेश देते हुए युद्ध से दूर रहने की सलाह देते रहे। वे अपने हित के बारे में न सोचकर समूचे विश्व के हित के बारे में सोचते थे। वे सारे संसार को एक शरीर मानते थे। जिसके एक अंग की पीड़ा की अनुभूति पूरे शरीर को होती है। इसलिए मनुष्य को केवल अपने या अपने समुदाय के हित की बात न सोचकर सारी सृष्टि के कल्याण की कामना करनी चाहिए।

दक्षिण अफ्रिका से लौटने के बाद महात्मा गांधी की कर्मभूमि भारतवर्ष बनी। उनके भारत आगमन के समय हिन्दी साहित्य में द्विवेदी युगीन कविता का अंत और छायावाद का श्रीगणेश हो रहा था। द्विवेदी युग की कविता दो दशकों से विकसित होती हुई महात्मा गांधी के दर्शन का संस्पर्श पाकर और अधिक सूक्ष्म हुई तथा मानव जीवन के निकट आ गई। छायावादी कविता की वैयक्तिकता गांधीवाद से प्रभावित होकर सामाजिकता की राह पर चल पड़ी। प्रगतिवादी कवियों ने गांधीवाद को स्वीकार तो नहीं किया पर मानवीय गुणों के विकास के सन्दर्भ में महात्मा गांधी की अहिंसा तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रभाव इनकी कविताओं में देखा जा सकता है। प्रयोगवादी और स्वातंत्र्योत्तर कविता में भी गांधी विचारदर्शन का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। सियाराम शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी,

सुमित्रानंदन पंत, शिवमंगल सिह 'सुमन', नरेन्द्र शर्मा आदि गांधी विचारदर्शन को आधार बनाकर काव्य रचना करने वाले कवियों में प्रमुख है। इस प्रकार द्विवेदी युग, छायावाद और छायावादोत्तर काल के सभी प्रमुख हिन्दी कवियों ने गांधी दर्शन के अनुरूप सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्याग्रह, हरिजनोद्धार, सर्वधर्म समभाव, रामराज्य के महत्त्व को समझा और उसे अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। द्विवेदी युग से आरम्भ यह परंपरा अंखड रूप से आज तक चली आ रही है।

भवानीप्रसाद मिश्र आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में अपने ढंग के एक विशिष्ट और अनूठे कवि हैं। इनकी काव्य साधना में न तो कोई वाद है और न कोई दल। इनका व्यक्तित्व सादगी की प्रतिमूर्ति है। जितनी सादगी इनके व्यक्तित्व में है, उतनी ही इनके कृतित्व में भी दिखाई पड़ती है। प्रेम और करुणा इनके काव्य के रेशे-रेशे में इस भाँति समाया है कि उसे एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। प्रेम और करुणा के इस अटूट सम्बन्ध ने ही उन्हें गांधी विचारदर्शन का समर्थ गायक बना दिया। सम्पूर्ण काव्य-यात्रा में गांधी विचारदर्शन की इतनी निष्ठा से साहित्य में प्रतिष्ठा करने वाला उनकी तरह का कोई दूसरा कवि नहीं है। महात्मा गांधी के संस्कारों की छाप से उनका सम्पूर्ण कवि व्यक्तित्व रंजित है। रहन-सहन और वेश-भूषा से भी भवानीप्रसाद मिश्र पक्के गांधीवादी हैं। खादी उनके लिए वस्त्र नहीं विचार है। वे एक विशिष्ट जीवनदर्शन के कवि हैं। गांधीवादी दर्शन और भारतीय संस्कृति के गहन अध्ययन और सम्पर्क से यह जीवनदर्शन निर्मित हुआ है। गांधी विचारधारा ही उनके चेतन और अवचेतन मन की अखण्ड राशि है।

भवानीप्रसाद मिश्र का रचना संसार हिन्दी साहित्य के इतिहास में वृहत भी है और महत् भी। उन्होंने अट्ठारह काव्य-संग्रह और एक खंड काव्य का प्रणयन किया है, जो विविध आयामों का उदघाटन करते हैं। भवानीप्रसाद मिश्र ने अत्यन्त सहज रूप से अपने रचना संसार का निर्माण किया है। काव्य को जीवन से जोड़ते हुए उन्होंने प्रचलित काव्य भ्रांतियों को तोड़ा। उन्होंने अनेक प्रकार की कविताएँ लिखी हैं । कुछ कविताओं का धरातल सामाजिक-सांस्कृतिक हैं, कुछ कविताएँ आत्मगत हैं, कुछ कविताएँ भाषा और शब्द की संवेदना सम्बन्धी हैं , कुछ कविताएँ स्वतंत्रता के बाद की घटनाओं और व्यक्तियों पर लिखी गई हैं, कुछ कविताएँ प्रकृति सम्बन्धी हैं। परन्तु इन सभी कविताओं का प्रधान स्वर गांधीवादी दर्शन है। इस प्रकार भवानीप्रसादज मिश्र का रचना-संसार विविध आयामी है, परन्तु गांधीवादी दर्शन इनके सभी काव्य-संग्रहों में पुष्प की गंध की भाँति विद्यमान है। जिस प्रकार पुष्प से गंध को अलगाया नहीं जा सकता उसी प्रकार गांधीवादी दर्शन से भवानीप्रसाद मिश्र की कविता को अलगाया नहीं जा सकता।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय 'भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में गांधीवादी धर्म-दर्शन' शीर्षक से है। धर्म संस्कृति का अनिवार्य और प्रमुख अंग है। महात्मा गांधी के

जीवन का निश्चित पथ-प्रदर्शक भी धर्म ही रहा, पर उनकी धर्म चेतना उन्हीं के विवेक और तर्कों से नियंत्रित है। गांधी-दर्शन भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य की आत्मा है। महात्मा गांधी ने अपने जिन धार्मिक विचारों को एकादश व्रत, वर्णाश्रम धर्म और सर्वधर्म समभाव के माध्यम से व्यक्त किया है, वही भवानीप्रसाद मिश्र के विचार बनकर उनकी कविता में घुलमिल गए हैं।

महात्मा गांधी ने आदमी के मन को नियंत्रित करने के उद्देश्य से जिन - सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अभय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारण और सर्वधर्म समभाव नामक - एकादश व्रतों के पालन की बात कही है, उन एकादश व्रतों की अभिव्यक्ति भवानीप्रसाद मिश्र की रचनाओं में देखी जा सकती है।

सत्य महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन का आधार है। सत्य से उनका आशय यह है कि हमें जीवन को हर कीमत पर सत्य के नियम के अनुसार चलाना है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में सच को सच कहना सिखने वाले उनके परम अनुयायी भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी कविताओं में प्राणपण से सत्य को प्रतिष्ठित किया है। अहिंसा एक सामाजिक सद्गुण है। जिसमें दया, करुणा, प्रेम आदि सब कुछ समाहित हो गए हैं। भवानीप्रसाद मिश्र के अनुसार हिंसा के पथ पर अगर किसी के जीवन में सुख आता है तो वह वास्तविक सुख नहीं बल्कि सुख का आभास मात्र है क्योंकि हिंसा मनुष्य को दारुण दु:ख के अलावा कुछ नहीं दे सकती। महात्मा गांधी की दृष्टि में केवल शारीरिक ब्रह्मचर्य ही ब्रह्मचर्य नहीं है। ब्रह्मचर्य का अर्थ सभी इंद्रियों का नियंत्रण है। महात्मा गांधी की भाँति भवानीप्रसाद मिश्र ने भी ब्रह्मचर्य सम्बन्धी महात्मा गांधी की इसी अवधारणा को अपनी कविताओं के माध्यम से उजागर किया है। वे जीवन में साधनों की पवित्रता को भी ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत स्वीकार करते हैं है। इसीलिए उनकी कविताओं में जीभ, आँख, कान, मन आदि इंद्रियों पर नियंत्रण का संकल्प अभिव्यक्त हुआ है। महात्मा गांधी अस्वाद व्रत के अन्तर्गत स्वाद या जायके के लिए भोजन ग्रहण करना वर्जित मानते थे। इसलिए भवानीप्रसाद मिश्र ने व्यसनों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए लोगों से सादा खाने और सादा पहनने का आग्रह किया। भवानीप्रसाद मिश्र ने अस्वाद व्रत को अपनी कविता में अभिव्यक्त करने के साथ-साथ जीवन में भी अपनाया। महात्मा गांधी के अस्तेय व्रत के अनुसार आवश्यकता से अधिक किसी भी वस्तु का संग्रह चोरी है। इसलिए वे आवश्यकता की सभी वस्तुएँ कम-से-कम रखने के हिमायती थे। भवानीप्रसाद मिश्र ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से हमें अस्तेय को अपने आचरण में उतारकर उपलब्ध साधनों का सीमित उपभोग करते हुए खुशहाल जीवन जीने की सलाह दी है। अभय के अभाव में संसार के किसी भी व्यक्ति के हृदय में सत्य, अहिंसा और प्रेम जैसे मानवीय गुणों का विकास नहीं हो सकता। इसलिए भवानीप्रसाद मिश्र निर्भयता को आध्यात्मिकता की पहली शर्त मानते हैं। अपरिग्रह के आदर्श को अपनाकर यदि प्रत्येक

व्यक्ति उतना ही रखे जितने की उसे जरूरत है तो किसी के जीवन में अभाव नहीं होगा। भवानीप्रसाद मिश्र ने अपरिग्रह के इस सिद्धान्त को न केवल अपने जीवन में अपनाया बल्कि अपनी कविता के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा कर लोगों को इससे अवगत कराया ताकि वे इस राह पर चलकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकें। महात्मा गांधी संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए शरीर श्रम को अनिवार्य मानते हैं। श्रम जीवन में संतोष और स्वास्थ्य का आधार है। भवानीप्रसाद मिश्र महात्मा गांधी के इन श्रम सम्बन्धी विचारों से अत्यन्त प्रभावित थे। इसलिए श्रम की महिमा का बखान करते हुए उनका मानना है कि जो व्यक्ति जितना अधिक श्रम करता है, उसके जीवन में सफलता का अनुपात उतना ही अधिक होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को शरीर श्रम के नियम का पालन करना चाहिए। स्वदेशी निस्वार्थ सेवा का सिद्धान्त है, जिसके केंद्र में अहिंसा और प्रेम है। स्वदेशी के व्रत के पालन से स्वावलम्बन को बढ़ावा मिलता है। इसलिए महात्मा गांधी चाहते थे कि हमें अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताएँ गाँव में निर्मित चीजों से ही पूरी करनी चाहिए। महात्मा गांधी की स्वदेशी की भावना के प्रचार-प्रसार हेतु कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने लघु उद्योगों के विकास और अपने ही देश में निर्मित वस्तुओं के प्रयोग की सलाह दी है। वर्ण व्यवस्था के समर्थक होने के बावजूद महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता को स्वीकार नहीं किया। महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता निवारण को अपने एकादश व्रत में स्थान दिया। उनका मानना था कि इसका निवारण हर व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है। अपने इसी धर्म और कर्त्तव्य का निर्वाह गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी कविताओं में अस्पृश्यता के खिलाफ आवाज बुलंद करके किया है। महात्मा गांधी के हृदय में विश्व के सभी धर्मों के प्रति आदर और सम्मान का भाव था। भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में धर्म के भेद को मिटाकर सर्वधर्म समभाव की स्थापना के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं।

जाति व्यवस्था का विरोध करने वाले महात्मा गांधी वर्ण व्यवस्था के पोषक थे। पर उन्होंने वर्ण व्यवस्था को शुद्ध सामाजिक उपयोग की दृष्टि से स्वीकार किया है। भवानीप्रसाद मिश्र भी जात-पाँत के रूढ़ विगत के घेरों को तोड़कर प्राणों की ओट देकर भी वर्णाश्रम धर्म को बचाने की बात अपनी कविताओं में करते हैं। महात्मा गांधी की दृष्टि में विश्व के विविध धर्मों में अनेकरूपता होते हुए भी उनकी आत्मा और संदेश एक हैं। भवानीप्रसाद मिश्र के हृदय में भी महात्मा गांधी की भाँति धार्मिक समभाव की भावना थी। इसलिए वे चाहते थे कि किसी भी व्यक्ति के हृदय में दूसरे के धर्म के प्रति घृणा या द्वेष का भाव न रहे।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का तृतीय अध्याय 'भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में गांधीवादी सामाजिक-राजनीतिक दर्शन' शीर्षक से है। भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में

रूढ़िवादिता, छुआछूत, स्वतंत्रता आन्दोलन, पंचायती राज, सर्वोदय और रामराज्य के वर्णन में गांधीवादी सामाजिक-राजनीतिक दर्शन उभर कर सामने आया है।

महात्मा गांधी मूलतः धार्मिक थे। पर उनकी धार्मिक भावना रूढ़ियों का विरोध करने वाली है। एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने छुआछूत, व्रत उपवास, तथा नारी जीवन सम्बन्धी लगभग सभी सामाजिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं का सक्रिय विरोध किया। गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र का भी मानना है कि रूढ़ियाँ सामाजिक विकास के मार्ग को अवरुद्ध कर जड़ता को आमंत्रित करती है। इसलिए उन्होंने अपनी कविताओं में समाज में व्याप्त जड़ता और रूढ़ियों का विरोध किया। महात्मा गांधी की भाँति भवानीप्रसाद मिश्र छुआछूत की रूढ़ि को हिन्दू धर्म के माथे पर लगा कलंक मानते हैं। इस छूत की चुड़ेल को उतारने के लिए तो वे स्वयं मर-मिटने के लिए भी तैयार हैं। नारी जीवन को पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा जैसी रूढ़ियों से छुटकारा दिलाकर उसे एक नई दिशा देने का प्रयास भी इनकी कविताओं में दिखाई देता है। भारतीय समाज की दुर्दशा सामाजिक रूढ़ियों के मौन समर्थन का परिणाम है। इसलिए कवि हमारे विकास में बाधक तमाम गयी-गुजरी बातों और तरीकों को आग में जलाकर रूढ़ियों के भंजन का आह्वान करते हैं, क्योंकि रूढ़ियों को तोड़कर ही हम नवनिर्माण में प्रवृत्त हो सकते हैं।

महात्मा गांधी अस्पृश्यता को मानव के प्रति पाप की संज्ञा देते थे। यह व्याधी देश को लगातार पतन के गर्त में ढकेल रही है। वे चाहते थे कि सारा देश अस्पृश्यों के उत्थान लिए प्रयास करे। दलितों के प्रति महात्मा गांधी की यही चिंता भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य का प्रमुख स्वर है। उनका मानना है कि संसार के सभी मानव समान है, इसलिए किसी को ऊँचा या नीचा समझना गलत है। शूद्र के घर में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी उतना ही पवित्र और महान है जितना कि ब्राह्मण के घर में जन्म लेने वाला व्यक्ति है। भवानीप्रसाद मिश्र साम्यवाद के विरोधी थे पर दलितों के उद्धार के लिए वे प्रगतिवाद को भी स्वीकार करने के लिए तैयार थे। छुआछूत की भावना समाज में व्याप्त तमाम भेदों की जड़ है। अगर यह भेद खत्म होता है तो केवल भारत में ही नहीं सारी दुनिया में समानता की भावना का विस्तार होगा। महात्मा गांधी की राह पर चलने वाले कवि भवानीप्रसाद मिश्र छुआछूत की भावना को जड़मूल से खत्म कर देना चाहते हैं। यही कारण है कि वे महात्मा गांधी के हरिजनोद्धार आन्दोलन को आज भी अपनी कविता के माध्यम से जीवित रखे हुए हैं। उनका मानना है कि जब तक दलित समाज के एक-एक व्यक्ति की पीड़ा खत्म नहीं होगी हम चुप नहीं बैठेंगे।

महात्मा गांधी के अनुसार ईश्वर ने संसार के सभी प्राणियों को स्वतंत्रता दी है इसलिए स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। उन्होंने सत्य और अहिंसा जैसे पवित्र साधनों का प्रयोग करते हुए स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया। भवानीप्रसाद मिश्र भी स्वतंत्रता की आकांक्षा में साधनों की पवित्रता को नहीं भूलते। उन्हें विश्वास है कि अगर

साधन पवित्र है तो हमारे हर वो साध्य पूर्ण होंगे जिनके सपने हमने देखे हैं। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा जैसे पवित्र साधनों को अपना अस्त्र बनाया और भवानीप्रसाद मिश्र ने इन्हें अपनी कविताओं के माध्यम से आगे बढ़ाया। भवानीप्रसाद मिश्र सत्याग्रह को आत्मा की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति होने के कारण सबसे बड़ी शक्ति मानते हैं।

महात्मा गांधी का रामराज्य नैतिक मूल्यों पर आधारित प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था है, जिसमें राजा और रंक दोनों को समान अधिकार प्राप्त है। भवानीप्रसाद मिश्र भारत के हर गली और हर घर में रामराज्य के स्वरूप को देखना चाहते थे। पर वास्तविकता के धरातल पर यह व्यवस्था हमारे देश में कहीं दिखाई नहीं देती। आजादी के बाद रामराज्य की इस परिणति से भवानीप्रसाद मिश्र क्षुब्ध हैं। अपनी इसी क्षुब्धता को उन्होंने बोझिल मन से अपनी कविताओं में व्यक्त किया है।

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय सर्वसेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति का मार्ग है, जिस पर लोग एक दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ते हैं। यह स्पर्धा की जगह स्नेह और शोषण की जगह सहयोग की भावना का विकास करता है। भवानीप्रसाद मिश्र सर्वोदय की इस भावना को सत्य और अहिंसा की राह पर चलते हुए स्नेह के बल पर फैलाना चाहते हैं। एक व्यक्ति को भी छोड़कर देश आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए कवि जो चल नहीं सकता उसे पीठ पर लेकर चलने की बात करते हैं, ताकि विकास की राह में कोई पीछे न छुट जाए।

सत्ता के विकेन्द्रीकरण में अपने विश्वास के चलते महात्मा गांधी ने गाँवों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए पंचायती राज की अवधारणा को सामने रखा। महात्मा गांधी के पंचायत राज की अवधारणा का मूल उद्देश्य गाँवों में रहने वाले लोगों को शोषण से मुक्ति दिलाकर उन्हें जीवन की मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना था। पर आज गाँव और गाँव में रहने वाले लोगों का विकास कम और शोषण ज्यादा होता है। महात्मा गांधी के पंचायत राज का स्वप्न देखने वाले गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र का हृदय गाँवों की इस स्थिति को देखकर व्यथित है। पर गांधी दर्शन में अपनी पूर्ण आस्था के चलते वे हताश नहीं हैं। उन्हें विश्वास है कि आज नहीं तो कल पंचायती राज व्यवस्था लागू होगी और पंचायतों के माध्यम से ही गाँवों की समस्या का समाधान होगा।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय 'भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में गांधीवादी आर्थिक दर्शन' शीर्षक से है। भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में हृदय परिवर्तन का सिद्धान्त (ट्रस्टीशिप), यंत्रनीति, श्रमनीति, कृषि-नीति और ग्रामोद्योग के वर्णन में महात्मा गांधी के आर्थिक विचार दृष्टिगोचर होतें हैं।

मानवतावादी आस्था पर आधारित हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त द्वारा महात्मा गांधी पूँजीपतियों के अस्तित्व को बनाये रखकर उनको सामाजिक धन के न्यासी के रूप में देखना चाहते थे। महात्मा गांधी के हृदय परिवर्तन के इस सिद्धांत का कविता में प्रतिपादन करते हुए भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं कि हमारे समाज में जिनके पास पूँजी है, वे सोचते हैं कि उनकी सम्पत्ति पर सिर्फ उनका अधिकार है। कवि चाहते हैं पूँजी पर सर्प की तरह कुँडली मारकर बैठने वाला पूँजीपति अपने स्वामित्व और लालच की भावना से ऊपर उठकर अपने अधिकार की बदौलत स्वयं को मालिक न समझकर न्यासी समझे और उस पूँजी का लाभ समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रयास करे जिसको इसकी जरूरत है।

महात्मा गांधी यंत्र पर आश्रित आधुनिक सभ्यता के घोर विरोधी थे। यंत्रों का प्रयोग श्रमिकों को विस्थापित कर उन्हें बेरोजगार बना देता है। उनका उद्देश्य यंत्रों का नाश नहीं बल्कि उनकी मर्यादा बांधना था। गांधीवादी कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने भी अपनी कविता के माध्यम से हमें यंत्रों के स्थान पर हाथ से काम करने का संदेश दिया है, क्योंकि हाथ से किया गया श्रम रचनात्मक होता है। उनके अनुसार यंत्र किसी देश या समाज की उन्नति का आधार नहीं बन सकते। यंत्रों का अत्याधिक प्रयोग हमारे गाँव और घरों की शील-संयम और सादगी को खत्म कर उन्हें असंस्कृत, भौण्डा और भद्दा बनाता है। कवि चिन्तित है कि वर्तमान युग में बड़े-बड़े कारखानों की स्थापना को ही प्रगति का मानदण्ड माना जाता है। पर यह तो प्रगति का आभास मात्र है, क्योंकि यांत्रिक सभ्यता लोगों का रोजगार छीनकर आर्थिक-सामाजिक असमानता की खाई पैदा करती है। इन बड़े-बड़े यंत्रों के स्थान पर चक्की और चरखे जैसे छोटे यंत्रों का प्रयोग श्रेयस्कर है, जो गाँव गली में सुख की वर्षा करते हैं।

महात्मा गांधी की आर्थिक नीति का महत्त्वपूर्ण अंग श्रम एक ओर लोगों को स्वास्थ्य प्रदान करता है तो दूसरी ओर सामाजिक संघर्ष को खत्म कर वर्ग भेद मिटाता है। श्रम का अभाव मानव जीवन में दरिद्रता और असंतोष का भाव पैदा करता है। महात्मा गांधी की इस श्रम नीति का पूर्ण समर्थन भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में परिलक्षित होता है। उनका कहना है कि हमें विकास के लिए किसी के सामने हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं है। विकास के लिए आवश्यक आर्थिक संसाधन वे परिश्रम के बल पर स्वयं अर्जित करने की बात करते हैं। श्रम की राह पर चलने वाला इधर-उधर नहीं ताकता। कवि की दृष्टि में श्रम अमृत पथ है, जिस पर चलकर मनुष्य आत्मनिर्भर बनता है। श्रम की प्रतीति मात्र से दुःख दैन्य दूर भागते हैं और श्रम से विरत शरीर निकम्मा बन जाता है। ऐसे अकर्मण्य व्यक्ति के जीवन में कभी उजाला नहीं होता। इतना ही नहीं वे तो बिना परिश्रम के रोटी खाने वाले व्यक्ति को समाज से बहिष्कृत कर आदमी की कोटि से अलग कर देना चाहते हैं। अस्वस्थता की स्थिति में श्रम के नियम का पालन न कर पाने की स्थिति में कवि स्वयं लज्जा का अनुभव करते हुए अपने को दरिद्र महसूस करते हैं।

महात्मा गांधी के आर्थिक दर्शन के केन्द्र में कृषक और कृषि है, जिसके अन्तर्गत उन्होंने कृषकों के शोषण पर आक्रोश व्यक्त करते हुए उनके उद्धार का प्रयास किया है। उनकी दृष्टि में कृषकों की उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति है। महात्मा गांधी के इस चिन्तन को भवानीप्रसाद मिश्र ने भावात्मक स्तर पर गहरी संवेदना के साथ सूक्ष्मता से अपनी कविताओं में अंकित किया है। कृषि के विनाश का मूल कारण यंत्रों का प्रयोग है। यंत्र सभ्यता किसानों के समक्ष भूखमरी की स्थिति पैदा करती है। इसलिए भवानीप्रसाद मिश्र किसानों की मुक्ति हेतु किसानों से औद्योगिक सभ्यता से नाता तोड़ने को कहते हैं। आर्थिक रूप से पिछड़े इन किसानों को इस स्थिति से उबारने का एकमात्र उपाय सहकारी खेती है। इसके चलते भवानीप्रसाद मिश्र अपनी कविताओं में किसानों को मिलजुल कर सहकारी खेती करने की सलाह देते हैं। इससे समय की बचत के साथ-साथ उत्पादन की क्षमता भी बढ़ेगी। महात्मा गांधी ने भारतीय कृषक के खुशहाल जीवन का जो स्वप्न देखा था उसी स्वप्न की सुन्दर अभिव्यक्ति भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में हुई है।

गाँवों को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने के लिए महात्मा गांधी ने ग्रामोद्योग का समर्थन किया। गाँव तभी आत्मनिर्भर हो सकते हैं जब गाँव के प्रत्येक व्यक्ति के पास कृषि के पूरक के रूप में कोई छोटा उद्योग हो जिससे जीवन सम्बन्धी समस्त आवश्यकताएँ पूरी हो सके। महात्मा गांधी के ग्रामोद्योग सम्बन्धी इन्हीं विचारो को अपनी कविता में विस्तार देते हुए भवानीप्रसाद मिश्र गाँव के लोगों से अपने और अपने परिवार की जरूरत के अनुसार खादी का उत्पादन करने के लिए चरखा कातने का आग्रह करते हैं, ताकि हमें वस्त्रों के लिए किसी का मुँह न ताकना पड़े। पर आज का व्यक्ति इतनी जहमत न उठाकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति बाहर की वस्तुओं से कर लेता है। भारतवासियों की यह मानसिकता भी कवि की दृष्टि से नहीं बच पाई है। उनका मानना है कि खादी के प्रयोग से ही हर व्यक्ति को रोजगार मिलेगा पर उदारीकरण के नाम पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हमारा अर्थिक शोषण कर रही हैं। भवानीप्रसाद मिश्र के अनुसार महात्मा गांधी की राह पर चलकर यदि हम घर-घर में ग्रामोद्योग की स्थापना कर अपनी जरूरत की वस्तुओं का उत्पादन कर लें तो इस स्थिति से उबर सकते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का पंचम अध्याय 'भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में गांधीवादी शिक्षा-दर्शन' शीर्षक से है। महात्मा गांधी शिक्षा को समस्त बंधनों से मुक्ति का साधन मानते थे। अक्षर ज्ञान कराने वाली प्रचलित शिक्षा पद्धति को अधूरी शिक्षा मानकर उन्होंने श्रम की गरिमा का पाठ पढ़ाने वाली शिक्षा की नई प्रणाली नई तालीम की अवधारणा को प्रस्तुत किया। कवि भवानीप्रसाद मिश्र भी प्रचलित शिक्षा पद्धति के स्थान पर भारत के पर्यावरण के अनुकूल नई तालीम के पक्षधर थे। इसलिए वे अपनी कविताओं में प्रचलित शिक्षा पद्धति के विरोध का स्वर मुखरित कर शरीर, बुद्धि और आत्मा में समन्वय स्थापित

करने वाली नई तालीम को अपनाने की बात करते हैं। भवानीप्रसाद मिश्र ने भी प्रचलित शिक्षा पद्धति की खामियों का अनुभव किया। वे भारतवासियों को नई तालीम के तहत हस्तशिल्प के माध्यम से शिक्षा दिलाना चाहते थे। इसलिए प्रचलित शिक्षा पद्धति और उसके परिणामों को अशुभ और काला बताते हुए कहते हैं कि इसमें अध्यापक अपने विचारों को छात्रों के समक्ष रखते हैं और छात्र निष्क्रिय श्रोता के रूप में बैठे रहते हैं। इतना ही नहीं इस पद्धति से शिक्षा प्राप्त लोग श्रम को हेय दृष्टि से देखते हैं। यह पद्धति पढ़े-लिखे जीव-जंतुओं की कतार खड़ी करती है जो देश और समाज के लिए किसी काम की नहीं है। भवानीप्रसाद मिश्र महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित नई तालीम को लागू करने के समर्थक हैं क्योंकि हमारे देशवासियों के मन और हाथ दस्तकारी को अतिशीघ्र आत्मसात् कर लेते हैं, इसलिए नई तालीम इनकी प्रकृति के अनुकूल है। यह समाज में कमकर, किसान, बुनकर, सुनार और लुहार के वर्चस्व को स्थापित करने वाली है।

भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में बच्चों का शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य है। इसमें कताई, बुनाई, खेती, बागवानी के माध्यम से बच्चों को भाषा, इतिहास, भूगोल, गणित आदि विषयों का उपयोगी ज्ञान कराकर उनके भविष्य की बुनियाद रखी जाती है। महात्मा गांधी की इस बुनियादी शिक्षा के पक्षधर भवानीप्रसाद मिश्र हमें हमारी संस्कृति से दूर करने वाली प्रचलित शिक्षा पद्धति को हमारे पतन का मूल कारण मानते हैं। उनका कहना है कि सभ्य और संस्कृत उसे कहा जाता है जो शिक्षित हो। परन्तु प्रचलित शिक्षा प्राप्त व्यक्ति तो स्वयं संस्कृति के लिए संकट है। महात्मा गांधी के विचारों के अनुरूप बच्चों को शिक्षा देने के उद्देश्य से स्कूल खोलने वाले भवानीप्रसाद मिश्र केवल ज्ञानार्जन और उपाधि को शिक्षा नहीं मानते। ऐसे लोग रट-रट कर जानकारी तो हासिल कर लेते हैं और बढ़-चढ़ कर बाते करते हैं। परन्तु उनका ज्ञान उनके मस्तिष्क तक ही सिमट कर रह जाता है। देश और समाज को इससे कोई लाभ नहीं होता।

स्त्री-शिक्षा का कोई स्वरूप निर्धारित नहीं करने के बावजूद महात्मा गांधी शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को विशेष सुविधा देने के पक्षधर थे। भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में प्रत्यक्ष रूप से महात्मा गांधी के स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी विचार देखने को नहीं मिलते। पर उनकी कविताओं में वर्णित स्त्री-जीवन सम्बन्धी समस्याएँ परोक्ष रूप से स्त्री-शिक्षा की ओर संकेत करती है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का षष्ट अध्याय 'भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में गांधीवादी मानव-मूल्य और विश्व-दृष्टि' शीर्षक से है। मानव-मूल्य मनुष्य के व्यवहार को निर्देशित करने वाले मानदण्ड हैं। मानवीय मूल्यों के प्रतीक माहात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवनदर्शन मानवीय मूल्यों पर आधरित है। संसार में ऐसा कोई मानव-मूल्य नहीं है जिसका स्पर्श

गांधी विचारधारा ने न किया हो। सत्य, अहिंसा, प्रेम, परोपकार, सेवा, विनम्रता, करुणा, सह-अस्तित्व आदि वे प्रमुख गांधीवादी मानवीय मूल्य हैं, जिनकी अभिव्यक्ति भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में हुई है। सत्य के प्रति आग्रह भवानीप्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में बराबर परिलक्षित होता है। उनके लिए सत्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मूल्य है। इसे संसार की कोई ताकत पराजित नहीं कर सकती। असंख्य कष्ट झेलने के बाद भी सत्य की राह पर चलने वाला अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। सत्य को अपनाकर हम केवल अपना ही नहीं आने वाली पीढ़ियों का भी कल्याण कर सकते हैं। मानव जाति की निधि अहिंसा को भवानीप्रसाद मिश्र जीवन में सुख की नींव बताते हुए कहते हैं कि हिंसा के बल पर प्राप्त सुख वास्तविक सुख नहीं बल्कि सुख का आभास मात्र है। हिंसा मनुष्य को दुःखों के अलावा और कुछ नहीं दे सकती। उनकी इच्छा थी कि लोग युद्ध का विरोध करें और अहिंसा की राह पर चलकर अपने जीवन को सुखमय बनायें। प्रेम मानव जीवन की सहजात वृत्ति है जो मानव को मानव से जोड़ती है। भवानीप्रसाद मिश्र के अनुसार प्रेम वह बंधन है जिसने सारी सृष्टि को एकता के बंधन में बांध रखा है। यह बंधन लगातार बढ़ने पर भी बंधन प्रतीत नहीं होता बल्कि सुख की अनुभूति कराता है। इसलिए कवि स्वार्थहीन प्रेम का प्रकाश फैलाकर सबके हृदय में ममता का विस्तार करना चाहते हैं। प्रेम अपनी ताकत के बल पर कटुता, विद्वेष, दंभ और पशुता के दाँत खट्टे करने में सक्षम है। निस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा परोपकार कहलाती है। भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में संसार की पीड़ा को हरने और पीड़ितों को सांत्वना देने की भावना अनेक स्थलों पर देखी जा सकती है। एक-दूसरे के दुःख-दर्द को समझकर उसे दूर करने के प्रयास में ही वे मानव जीवन की सार्थकता मानते हैं। सृष्टि के दुःखी और पीड़ित मानव के आँसू को पोंछकर उनके जीवन को खुशहाल बनाना उनकी कविताओं का प्रमुख स्वर है। कवि भवानीप्रसाद मिश्र सेवा को भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण मानव-मूल्य मानते हैं। वे महात्मा गांधी की भाँति मनुष्य को जीवन में कष्ट सहकर भी सेवा रूपी मानव-मूल्य को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। वे संसार में सच्चा मनुष्य उसे स्वीकार करते हैं, जो सच्चाई की राह पर चलते हुए लूले-लंगड़े की निस्वार्थ भाव से निर्भयतापूर्वक सेवा करे। अहंकार का नाश कर व्यक्तित्व का विकास करने वाली विनम्रता महत्त्वपूर्ण मानव-मूल्य है। महात्मा गांधी के हृदय में सबके प्रति विनम्रता का भाव था। भवानीप्रसाद मिश्र ने भी महात्मा गांधी द्वारा समर्थित विनम्रता को अपनी कविता और व्यवहार में स्थान दिया। सबके प्रति सदयता और नम्रता उनके जीवन का सिद्धान्त था। उनका मानना था कि संसार में मनुष्य को किसी के भी प्रति क्रूर होने का अधिकार नहीं है। विनम्रता के बल पर मनुष्य क्रोध पर विजय प्राप्त कर प्रलय को रोकने में सक्षम हो सकता है। भवानीप्रसाद मिश्र की रचनाओं में सारी सृष्टि के प्रति करुणा की भावना निहित है। जिससे वे आदमी के बंजर को सींचना चाहते हैं। उनकी कविताओं में

संसार के प्रत्येक जीव और पत्ती पेड़ तक की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानकर उसे दूर करने का प्रयास देखा जा सकता है। गांधी दर्शन के प्रभावस्वरूप उनकी अनेक कविताओं में सह-अस्तित्व की भावना उजागर हुई है। उनका मानना है कि सह-अस्तित्व की भावना के बिना संसार में कोई भी व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता है। अतः पारस्परिक मतभेदों को भूलाकर हमें एक दूसरे के सहयोग के लिए आगे आना चाहिए।

सार्वभौम के नियम पर अपनी आस्था के चलते महात्मा गांधी विश्व की सभी दिशाओं का कल्याण चाहते थे। इसलिए प्रेम की परिधि का विस्तार करते हुए देश और धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर उन्होंने समूची दुनिया को उसमें समेट लिया। कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने इस बात का अत्यंत गहराई से अनुभव किया और महात्मा गांधी की यह विश्व-दृष्टि उनकी कविता का उद्देश्य बन गई। भवानीप्रसाद मिश्र के समस्त काव्य सृजन का उद्देश्य देश और समाज की सीमा से ऊपर उठकर समूचे विश्व की पीड़ा को वाणी देना है। इतना ही नहीं वे विश्व के तमाम कवियों से अपने विचारों को संकीर्णता के घेरे से बाहर निकालकर विशद विस्तार देने का आह्वान करते हैं। महात्मा गांधी की भाँति भवानीप्रसाद मिश्र भी पूरे विश्व को एक मानते हैं। उनकी दृष्टि में एक का भला सबका भला है और एक के नुकसान में सबका नुकसान। इसलिए वे लोगों से धरती और आसमान की सीमाओं को तोड़कर एक होने का आग्रह करते हैं। वे कहते हैं कि आदमी और औरत, भाषा और भेष तथा धर्म और देश के आधार पर बने घेरे गलत हैं। इसलिए हमें इन घेरों को तोड़कर पूरे विश्व के हित के बारे में सोचना चाहिए। पूरे विश्व के विकास में ही सबका विकास संभव है। कवि अपने दुःख दर्द की भावना से ऊपर उठकर सारे संसार के दुःखों का निराकरण करना चाहते हैं। पर युद्ध की आशंकाओं ने गांधी विचारदर्शन के कवि को अन्दर तक कुरेदा। युद्ध के समाधान के लिए वे निरस्त्रीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ भारत से कराने की बात करते हैं। भारत द्वारा निरस्त्रीकरण का उदाहरण प्रस्तुत कर पूरे विश्व को शांति का संदेश देकर महात्मा गांधी की विश्व-दृष्टि को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करते दिखाई देते हैं। वे वाद-विवाद, दल, फिरके आदि को विश्व एकता के मार्ग की बाधा मानते हैं। वाद-विवाद से ऊपर उठकर यदि समग्र विराट का दर्शन किया जाय तो सृष्टि को खण्ड-खण्ड होने से बचाया जा सकता है। इस प्रकार महात्मा गांधी की विश्व-दृष्टि के प्रभावस्वरूप भवानीप्रसाद मिश्र बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के आदर्श पर चलते हुए अपनी कविताओं द्वारा पूरे विश्व में सुख-शांति एवं स्नेह का संचार करना चाहते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के निष्कर्ष को निम्न बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है :

1. 'गांधीवाद' महात्मा गांधी के जीवनदर्शन के लिए सर्वाधिक प्रचलित तथा सर्वमान्य नाम है। यह दुनिया की तमाम उत्तम विचारधाराओं का संकलन है। आचरण पर टिका और

कर्मों से सींचा गांधीवादी जीवनदर्शन बढ़ते औद्योगीकरण, आत्मकेन्द्रियता और भोगवाद से त्रस्त विश्व के लिए अचूक मरहम है। गांधीवादी दर्शन का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र बचा हो, जिसे गांधीवाद ने स्पर्श नहीं किया है। महात्मा गांधी का सम्पूर्ण धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक दर्शन नैतिक विश्वासों पर आधारित है। इसकी मूल प्रेरणा 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' के परंपरागत आदर्श में निहित है।

2. महात्मा गांधी के भारत आगमन के बाद सभी काव्यान्दोलनों और वादों जैसे द्विवेदी युग, छायावाद और छायावादोत्तर युग के प्रमुख कवियों ने उनके व्यक्तित्व और दर्शन के अनुरूप सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्याग्रह, हरिजनोद्धार, सर्वधर्म समभाव, रामराज्य के महत्त्व को समझा और उसे अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया। यहाँ तक कि क्रांतिकारी और साम्यवादी कवि भी उनके प्रभाव से अछूते नहीं रहे। हिन्दी कविता में गांधीवादी दर्शन के व्यापक प्रभाव को दो रूपों में देखा जा सकता है। प्रथम के अन्तर्गत गांधीजी के व्यक्तित्व अथवा कर्म सौन्दर्य पर मुग्ध होकर प्रशस्तिपरक साहित्य का सृजन हुआ तो, द्वितीय के अन्तर्गत महात्मा गांधी का प्रभाव उनके विचारदर्शन के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। गांधी दर्शन का यह प्रभाव हिन्दी कविता में द्विवेदी युग से लेकर आद्यतन हिन्दी कविता तक दृष्टिगोचर होता है।

3. सादगी की प्रतिमूर्ति भवानीप्रसाद मिश्र आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में अपने ढंग के एक विशिष्ट और अनूठे कवि हैं। जितनी सादगी इनके व्यक्तित्व में है, उतनी ही कृतित्व में भी दिखाई देती है। महात्मा गांधी के संस्कारों की छाप से उनका सम्पूर्ण कवि व्यक्तित्व रंजित है। नयी कविता का और उसके बाद शायद ही कोई कवि हो जिसने गांधी दर्शन से इतना दृढ़ और निश्छल सम्बन्ध रखा हो। भवानीप्रसाद मिश्र ने अत्यन्त सहज रूप से अपने रचना संसार का निर्माण किया है। भवानीप्रसाद मिश्र के लिए कविता स्वयं को अभिव्यक्त करने का साधन है। इनकी हर कविता के भीतर से इनके विचार, इनकी आस्था और इनका व्यक्तित्व झांकता हुआ दिखाई देता है। इनके विविध आयामी रचना संसार में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, गांधीवादी, व्यंग्यात्मक, आत्मगत और आशा एवं उत्साह की व्यंजक कविताएँ मिलती हैं। पर इनकी कविताओं का मूल स्वर गांधीवाद है जो पुष्प की गंध की भाँति उसमें समाया है।

4. संसार के सभी धर्मग्रन्थों में जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए कुछ सूत्र निर्धारित किये गए हैं। इन्हीं जीवन सूत्रों - सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अभय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारण और सर्वधर्म समभाव – को अपने एकादश व्रत में स्थान देकर महात्मा गांधी ने लोगों से इन्हें अपने आचरण में उतारने का आग्रह किया है। कवि भवानीप्रसाद मिश्र भी इन सूत्रों को जीवन की आदिम सुगंध मानकर

मानवता की स्थापना के लिए इनको आवश्यक मानते हैं। इनका पालन दुःखों से मुक्ति दिलाकर जीवन को खुशहाल बनाता है। भवानीप्रसाद मिश्र ने इन एकादश व्रतों को आत्मसात् किया, उन्हें जिया और अपनी कविता के माध्यम से अभिव्यक्त भी किया। ये एकादश व्रत उनके काव्यरूपी सागर में रत्नों की भाँति सर्वत्र चमकते हुए दिखाई पड़ते हैं। वर्ण व्यवस्था के प्रति कवि का दृष्टिकोण रचनात्मक है। वे वर्ण व्यवस्था को उसी रूप में स्वीकार करते हैं जो महात्मा गांधी को मान्य था। सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने वाली इस व्यवस्था को वे प्राणों की ओट देकर भी बचाना चाहते हैं। 'धर्म के भेद मेटने' का गीत गाने वाले कवि भवानीप्रसाद मिश्र की रचनाओं में सर्वधर्म समभाव की भावना अपनी पूर्ण वास्तविकता के साथ उजागर हुई है।

5. महात्मा गांधी का समस्त सामाजिक-राजनीतिक दर्शन भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में रूपायित हुआ है। सामाजिक विकास का मार्ग अवरुद्ध करने वाली जड़ परम्पराओं की वाहक रूढ़ियों पर भवानीप्रसाद मिश्र की कविता में व्यक्त तीखी टिप्पणी एक ओर इनसे मुक्ति का प्रयास है तो दूसरी ओर इन शृंखलाओं को तोड़ने का प्रोत्साहन भी है। महात्मा गांधी का हरिजनोद्धार आन्दोलन इनके काव्य में आज भी जीवित है। स्वतंत्रता की आकांक्षा में कवि साधनों की पवित्रता को नहीं भूलते, क्योंकि अशुद्ध साधनों से प्राप्त स्वतंत्रता क्षणिक होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के शुद्ध साधन सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा उनकी रचनाओं में अत्यन्त सूक्ष्मता से अभिव्यक्त हुए हैं। आधुनिक भारत के लिए महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित रामराज्य का स्वप्न और उसके समानांतर भवानीप्रसाद मिश्र की काव्ययात्रा में आकार पाता स्वप्न दोनों ही अपने समकालीन यथार्थ की ठोस आधारभूमि पर निर्मित है। इनकी कविताओं में एक ओर महात्मा गांधी द्वारा परिभाषित पंचायती राज के टूटकर बिखर जाने की बोझिल अभिव्यक्ति है तो दूसरी और स्नेह के बल पर धरती पर सर्वोदय की स्थापना का दृढ़ संकल्प भी ध्वनित है।

6. गांधीवादी आर्थिक चिन्तन पर गम्भीरता से विचार करने के बाद भवानीप्रसाद मिश्र ने अनुभव किया कि इन विचारों को आत्मसात् करके समाज में कटुता उत्पन्न किए बगैर शांतिपूर्ण आर्थिक क्रान्ति हो सकती है। कवि पूँजीपतियों को जनता के कल्याण के लिए कार्य करने वाले न्यासी के रूप में देखना चाहते हैं, जिससे उनका अस्तित्व भी बना रहे और पूँजी का लाभ भी सब तक पहूँच सके। महात्मा गांधी की यंत्र नीति का समर्थन करती इनकी कविताएँ लोगों को बेरोजगार कर, वर्गभेद की खाई को चौड़ा करनेवाले यंत्रों के स्थान पर गाँव गली में सुख की वर्षा करने वाले छोटे यंत्रों के प्रयोग पर बल देती है। वे चाहते हैं कि मनुष्य यंत्रों को त्याग कर अपनी गति सहज करे। महात्मा गांधी के श्रम सम्बन्धी विचारों ने तो स्वयं कविता का रूप ले लिया है। गांधीवादी आर्थिक दर्शन के केन्द्र कृषक और कृषि की उन्नति के लिए भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ सहकारी खेती का

समर्थन करती है, जिससे किसानों को शोषण से मुक्ति मिले। इसके साथ-साथ गाँव और गाँवों में रहने वाले किसानों को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कृषि के साथ-साथ कृषि पर आधारित ग्रामोद्योग की स्थापना कर अपनी जरूरत की वस्तुओं के उत्पादन का संदेश भी इनकी कविताओं में निहित है।

7. भवानीप्रसाद मिश्र ने महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर प्रत्यक्ष रूप से अधिक विचार व्यक्त नहीं किये हैं। परन्तु प्रचलित शिक्षा पद्धति की खामियों को उजागर करते हुए उसके प्रति असंतोष के भाव उनकी कविताओं में देखे जा सकते हैं। प्रचलित शिक्षा पद्धति के प्रति यह असंतोष ही उन्हें महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों के समर्थन में खड़ा कर देता है। प्रचलित शिक्षा पद्धति के परिणामस्वरूप शिक्षित वर्ग अपने सांस्कृतिक मूल्यों तथा आदर्शों को विस्मृत कर बैठा है। इन शिक्षित भारतवासियों की विकृत मानसिकता का ग्लानियुक्त वर्णन भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी कविताओं में किया है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए महात्मा गांधी ने भारत के वातावरण और परिवेश के अनुकूल नई तालीम और बुनियादी शिक्षा की अवधारणा को प्रस्तुत किया। भवानीप्रसाद मिश्र ने भी बार-बार अपनी कविताओं में शिक्षित वर्ग की दुर्दशा को वर्णित कर वर्तमान पतनावस्था से उबरने के लिए हस्तशिल्प को आधार बनाकर दी जाने वाली इन नई शिक्षा पद्धतियों और स्त्रियों के विकास के लिए स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया है। सारांशतः महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी सर्वमान्य विचार भवानीप्रसाद मिश्र के विचार बनकर उनकी कविता में अभिव्यक्त हुए हैं।

8. भवानीप्रसाद मिश्र गांधीवादी मानव-मूल्यों के सचेत और सजग वाहक कवि हैं। बंधी-बंधाई सीमाओं का अतिक्रमण कर मानवता को तरजीह देने वाली भवानीप्रसाद मिश्र की कविता का आयाम चाहे व्यक्ति हो या समाज उसका केन्द्रीय स्वर मानव-मूल्य है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, परोपकार, सेवा, करुणा आदि गांधीवादी मूल्यों में अपनी आस्था के चलते कवि आधुनिकता के नाम पर प्रश्रय पा रहे नकारात्मक विचारों से बार-बार टकराते हैं। वे आधुनिकता के नाम पर अपने मूल्यों को त्यागने के पक्ष में नहीं हैं। उनकी कविता गांधीवादी मानव-मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास है। साहित्य और कला की दुनिया में आज मूल्यों की सर्वाधिक आवश्यकता है, क्योंकि आज के व्यस्त जीवन में यही एक स्वर है जो सबसे ज्यादा मद्धिम होता जा रहा है। भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी आत्मा की अतल गहराइयों से इसे बुलन्द किया है।

9. महात्मा गांधी की विश्व-दृष्टि को अपने काव्य का उद्देश्य मानने वाले कवि भवानीप्रसाद मिश्र का रचना संसार घेरों-खाइयों और वादों से ऊपर है। इसमें विश्व का मानव धर्म प्रतिफलित हो रहा है। सारे संसार के कल्याण की कामना करती भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ अपने हित से विश्व के हित तथा विश्व के अहित को अपने अहित से जोड़कर देखने

का संदेश देती है। सृष्टि के समस्त जड़-चेतन, स्थावर-जंगम प्राणी और पदार्थ भवानीप्रसाद मिश्र की इस व्यापक विश्व-दृष्टि और प्रेम-परिधि में समाहित हो जाते हैं।

सिद्ध है कि भवानीप्रसाद मिश्र ने गांधीवादी दर्शन को व्यापक रूप में स्वीकार किया है। उनके लिए गांधीवादी दर्शन मानव मुक्ति, मानव गरिमा और मानव शक्ति की पहचान का दर्शन है। उनके काव्य में गांधीवाद की स्थापना मानवीय मूल्यों की स्थापना है। उन्होंने महात्मा गांधी के विवेक, अन्तर्दृष्टि और विश्वास को पकड़ने का सार्थक प्रयास किया है। अपने रचना संसार में वृहतर मानवीय सरोकारों से जुड़कर भवानीप्रसाद मिश्र प्रासंगिक और अर्थवान कवि सिद्ध हुए हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में अभिव्यक्त गांधीवादी दर्शन को तो उद्घाटित करता ही है, साथ ही प्रकारान्तर से यह भी दर्शाता है कि एक कुशल कवि अपनी संवेदनाओं और विचारों के बीच संतुलन रखते हुए उन्हें किस प्रकार अपने काव्य में सहजता के साथ रूपायित करता है। इस दृष्टि से भी प्रस्तुत शोध प्रबंध महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा ऐसी मेरी आशा है।

XXXX